आओं हम करें सबकुछ अपने वश

ईश्वर ने मनुष्य को सब कुछ दे दिया है लेकिन जब मनुष्य विकारों के अधीन हो जाता है तब ना उसके वश में कुछ होता है ना ऊपर वाले के वश में। ऐसे समय में ऊपर वाला भी साक्षी हो जाता है और केवल मार्ग बतलाता है कि - हे पार्थ तू राजयोग के मार्ग पर चल...!!!

ना कुछ तेरे, ना कुछ मेरे वश में, तो भी इंसान दौड़ रहा है, वह भी इतना तेज़ दौड़ रहा है कि सूर्य की किरणों की रफ़्तार को भी छू रहा है। क्यों नहीं दौड़ना चाहिए, क्योंकि ईश्वर ने मनुष्य को बुद्धि जो दी है। बुद्धि को अगर सही दिशा दी ले जायें तो इंसान क्या वश में नहीं कर सकता है? वर्तमान में तो मनुष्य ने प्रकृति को भी अपने वश में कर रखा है, फिर भी लोग कहते हैं सब कुछ ऊपर वाले के वश में है। जब इंसान हताश और निराश हो जाता है तब कहता है कि सब कुछ ईश्वर के हाथ में है। जब उसके पास सत्ता आती है तो कहता है मैं ही ईश्वर हूँ, है ना कमाल की बुद्धि! जहाँ स्वार्थ होता है वहाँ मनुष्य चल पड़ता है, कुछ ना कुछ वश में कर भी लेता है लेकिन कुछ समय के लिए, बाद में फ़कीर ही रह जाता है। इंसान चाहे तो सब कुछ अपने वश में कर सकता है परंतु उसके लिए जीवन का पहला पाठ पढ़ना ज़रूरी है। ईश्वर ने मनुष्य को सब कुछ दे दिया है लेकिन जब मनुष्य विकारों के अधीन हो जाता है तब ना उसके वश में कुछ होता है ना ऊपर वाले के वश में। ऐसे समय में ऊपर वाला भी साक्षी हो जाता है और केवल मार्ग बतलाता है कि - हे पार्थ! तू राजयोग के मार्ग पर चल, तू अपने आपको पहचान व मुझे पहचानकर और मेरे दिए गये उपदेश पर चल। परंतु होता क्या है, तब तक मनुष्य विकारों के इतना अधीन हो जाता है कि उसे समय ही नहीं मिलता अपने आपको जानने के लिए।

कालचक्र का एक स्वर्णिम काल जिसे सतयुग कहा जाता है जिसमें हर मनुष्य देवी-देवता के रूप में होते हैं और सब कुछ उनके वश में होता है, प्रकृति भी सतोप्रधान होती है। इस युग में मनुष्य का ही नहीं परंतु जानवरों का भी आपस में आत्मिक स्नेह होता है, एक घाट पर शेर और गाय पानी पीते हैं। कालांतर में द्वापर युग में मनुष्य द्वारा अपना आत्मसम्मान,संयम-नियम खो बैठने से कुछ भी उसके वश में नही रहता। प्रकृति भी तमोप्रधान हो जाती है और मनुष्य का आपस में स्वार्थ से भरा स्नेह होता है। यहाँ से ही विकारों की उत्पत्ति शुरु होती है और कलियुग आरंभ हो जाता है। इसमें तो विकारों, स्वार्थ, अहंकार आदि चरमसीमा पर पहुँच जाते हैं। ऐसे समय में कुछ भी मनुष्य के वश में नहीं रहता। इतना ही नहीं उनकी अपनी जबान भी वश में नहीं, जिसे ढ़ाई इंच की बिना हड्डी वाली कहते हैं परंतु वह कइयों की हड्डी पसली तोड़ देती है। इस युग में मनुष्य सोचता है यदि मैं सारी सुख सुविधाएं जुटा लूं तो यहीं पर हमें सतयुग जैसा सुख मिल सकता है। लेकिन सतयुग में सिर्फ सुख-सुविधाएं ही थोड़े ही होंगी! इंसान के लिए बहु मंज़िला इमारतें, मनुष्य हवा में हवाई जहाज पर उड़ता है, पानी के अंदर महल बना लेता है, सब सुख-सुविधाएँ हैं परंतु पापाचार बढ़ा हुआ है। ऐसे काल में मनुष्य सब कुछ होते हुए भी अपने आपको अकेला ही पाता है। भौतिक संसाधन वश में होते हुए भी स्वयं को वश में नहीं रख सकता, इंद्रियाँ चलायमान होती रहती हैं और कर्म विकर्म बनते रहते हैं। जिससे पाप की वृद्धि होती है और मनुष्य सब कुछ खो बैठता है। यह युग कलियुग है जिसमें कुछ भी मेरे वश में नहीं होता ना ऊपर वाले के वश में। लेकिन दिन ढ़लने के बाद रात आती है और रात होने के बाद सवेरा होता है। इस तरह वर्तमान युग कलियुग का अंत व सतयुग का संगमयुग जिसे हीरे समान युग भी कह सकते हैं। गीता में भी लिखा है - जब जब धर्मग्लानी होती है तब मैं स्वयं परमपिता परमात्मा इस धरातल पर अवतरित होता हूँ। अब वह हीरे समान समय है जिसमें ना कुछ तेरे वश में नहीं परंतु सब कुछ अपने वश में कर सकते है। हमें वश में किसी व्यक्ति को नहीं, अपनी कर्मेन्द्रियों और विकारों को करना है। इन इन्द्रियों को ही हमें दास बनाना है और स्वयं इन्हीं का राजा, शासक या अधिकारी बनना है। अपने स्वार्थ की सिद्धि में लगे रहने की बजाए प्रेम, सेवा और त्याग से दूसरों के भाग्य को जगाने में लगना है। मन को शुद्ध करो, निर्मल मन से सुख की सरिता बहेगी और विश्व में हरियाली छा जायेगी। बहुत काल बीत चुका है दूषित मन को अन्दर से संजोते संजोते। अब जबकि स्वयं भगवान हमारा श्रृंगार कर रहा है, जबकि समय हमारा आह्वान कर रहा है, तो हम अपने अन्दर सम्भाल कर रखी हुई इन बुरी भावनाओं को कूड़ा समझ कर बाहर क्यों नहीं फेंक देते? अब समाप्ति का समय है और पुनः सबका बिछुड़ना हो जायेगा। कोई भी किसी को नहीं पहचानेगा। तो क्यों न हम इस अन्तिम समय को स्नेह की लेन देन करते हुए बितायें। सुख का शासन शस्त्र के बल से प्राप्त नहीं होगा, महानता दूसरों को अधीन बनाने से प्राप्त नहीं होती बल्कि स्वयं के मनोविकारों और कर्मेन्द्रियों की गुलामी से मुक्त करने पर प्राप्त होती है।

इस प्रकार कलियुग का अन्तिम-संस्कार करके कल्याणकारी संगमयुग के इस अनमोल जन्म को ईश्वरीय कार्य में पूर्ण शक्ति से उतार लेना चाहिए। कलियुग को मटियामेट करने का मन में दृढ़ संकल्प लेना चाहिए। क्योंकि हम मनुष्यात्माओं के पास ऐसा अपार ज्ञान है, ऐसी अमोघ योग-शक्ति है और लक्ष्य प्रति ऐसा जन-बल है कि वह इस विश्व को बदलकर कौड़ी-तुल्य से हीरे-तुल्य बनाकर ही छोड़ेगा। अतः ऐसे हीरे समान समय को सार्थक करना है और ईश्वर से सतयुगी सुख, शान्ति, आनंद व सतयुगी राजाई को अपने वश में करके दूसरों को भी इस राजाई को वश में कराने का सौभाग्य प्रदान करने का वर्तमान में आनंद लेना है।

- ब्र.कु. दिलीप, माउण्ट आबू

पिपली-करुक्षेत्र। शिव जयंती के कार्यक्रम में उपस्थित हैं जिला पार्षद मनीषा क्वात्रा, ब्लॉक समिति रुचिका राणा व ब्र.कु. प्रेरणा।

फरीदाबाद सेक्टर 9। महाशिवरात्रि पर शिवध्वजारोहण करते हुए बी.जे.पी. नेता रेनू भाटिया, कौशल बाथला, ब्र.कु. हरीश बहन व अन्य।

दिल्ली-बुराड़ी। शिव जयंती पर ध्वजारोहण के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में ब्र.कु. लाज, ब्र.कु. सुधा, विधायक संजीव झा व अन्य।

श्यामनगर-प.बंगाल। महाशिवरात्रि पर कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए फादर टोनी,बंदेल चर्च, असित मजुमदार,विधायक, अमित मुखर्जी,वाइस चेयरमैन,म्युनिस्पैलिटी, मौसमी साह, काउन्सलर, ब्र.कु. कमला, ब्र.कु. रीता, ब्र.कु. सुशीला व अन्य।

राजसमंद-आमेट(राज.)। शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं एस.डी.एम. गोपाल स्वर्णकार, जल विभाग अधिकारी विवेक कच्छावा, ब्र.कु. रीटा, ब्र.कु. पूनम व अन्य।

सांपला-हरियाणा। `बेटी बचाओ सशक्त बनाओ' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. दर्शना, सुरेश राठी,प्रधान,पतंजली योग, डॉ. प्रवीण प्रधान,डॉक्टर्स एसोसिएशन, ब्र.कु. ललिता व अन्य।

ब्यावर-राज.। शिव ध्वजारोहण के पश्चात् उप कारागृह के जेलर प्रहलाद सिंह गुर्जर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विमला, ब्र.कु. गंगा व ब्र.कु. अंजू।

कोसी कलाँ-उ.प्र.। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण करते हुए चेयरमैन भगवत प्रसाद रुहेला, ब्र.कु. ज्योत्सना व अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।